nbt.india
एकः सूते सकलम्

साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

जनवरी 2014 वर्ष 19, अंक 1

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला की दस्तक

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
15 से 23 फरवरी, 2014
प्रगति मैदान, नई दिल्ली
सम्मानित अतिथि देश : पोलैंड
www.newdelhiworldbookfair.gov.in

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला फिर से दस्तक दे रहा है। पुस्तकप्रेमियों, लेखकों, पाठकों एवं प्रकाशकों का एक बार फिर नई दिल्ली के प्रगति मैदान में जमावड़ा होगा जहाँ पुस्तकें होंगी, और केवल पुस्तकें होंगी। 15 से 23 फरवरी, 2014 की अवधि अफ्रीका-एशिया क्षेत्र के इस सबसे बड़े अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले की गवाह बनेगी। विदित हो कि इस पुस्तक मेले का सह-आयोजक है 'भारत व्यापार संवर्धन संगठन' (ITPO)

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले 2014 का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी के कर-कमलों द्वारा संपन्न होगा। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा सन् 1972 से प्रारंभ विश्व पुस्तक मेला का यह 22वाँ पड़ाव होगा।

विदित हो कि नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला प्रकाशन जगत का सबसे बड़ा आयोजन होता है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा अब तक इस पुस्तक मेले के 21 आयोजन हो चुके हैं। वर्ष 2012 तक द्विवार्षिक रूप से आयोजित होकर वर्ष 2013 से यह वार्षिक आयोजन हो गया है।

पृ. सं. 2 पर जारी...

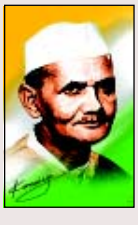

लड़ाई से समस्याएँ सुलझती नहीं, और पैदा होती हैं। एक-दूसरे से लड़ने के बजाय हम गरीबी, बीमारी और अज्ञान से लड़ें। सामान्य लोग यह चाहते हैं कि उनको शांति से तरक्की करने का मौका मिले। —लाल बहादुर शास्त्री

अत्यंत ईमानदार, दृढ़ संकल्प, शुद्ध आचरण और महान परिश्रमी; ऊँचे आदर्शों में पूरी आस्था रखने वाले निरंतर सजग व्यक्ति का ही नाम है—लाल बहादुर शास्त्री। —जवाहरलाल नेहरू

पुण्यतिथि, 11 जनवरी (1966) पर स्मरणस्वरूप

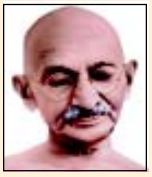

मैं चाहता हूँ कि देश के लिए अपने जीवन का बलिदान करूँ और विश्व के लिए अपने देश का।

पुण्यतिथि, 30 जनवरी (1948) पर स्मरण

महात्मा गाँधी
अहिंसा के पथिक
सत्य-पुजारी।
डॉ. दयानिधि
बरगढ़, ओड़िशा

सत्य ही परमेश्वर है, यह बात मेरी सबसे अमूल्य निधि रही है। मेरी कामना है कि यह सब की ही अमूल्य निधि हो। —महात्मा गाँधी

अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
जन्मदिन स्मरण : 30 जनवरी (1889) **जयशंकर प्रसाद**

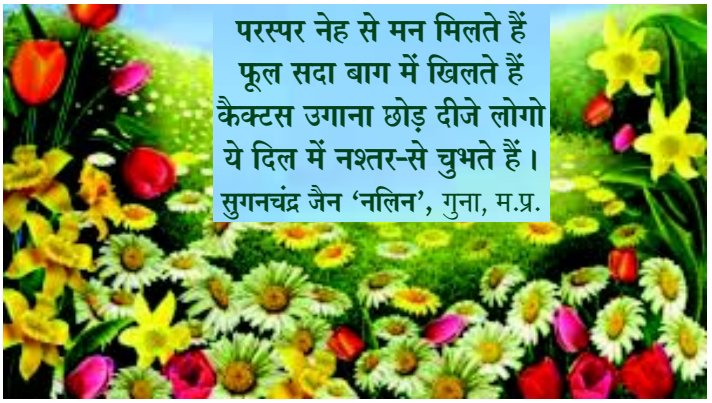

किसी के पाप से घृणा करो, पापी से घृणा मत करो। —महात्मा गाँधी

पोलैंड को वर्ष 2014 के लिए 'सम्मानित अतिथि देश' बनाए जाने की घोषणा की गई है। पोलैंड एक वृहत प्रतिनिधिमंडल को लेकर इस पुस्तक मेले में अपनी नवीनतम पुस्तकों के साथ उपस्थित होगा। चूँकि नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला साहित्य के साथ ही कला और संस्कृति का भी संगम होता है अतः हर बार की तरह इस बार भी प्रगति मैदान का लाल चौक भारतीय गीत-संगीत और नृत्यों से गुलजार रहेगा जहाँ प्रतिदिन सांस्कृतिक आयोजन होंगे।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला अपने हर पड़ाव में कुछ नई चीजों के साथ उपस्थित होता है जो इसे और भी व्यापक एवं बहुद्देशीय बना देता है। वर्ष 2013 में हमने नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में जिन विशेषताओं को जोड़ा था उनमें से अधिकांश इस वर्ष भी बनी रहेंगी। इनमें शामिल हैं–लेखकों का कोना या लेखक मंच, नई दिल्ली प्रतिलिप्यधिकार मंच, सीईओ स्पीक एवं ई-बुक्स एवं ई-जोन आदि। ई-जोन नया प्रयोग होगा।

विश्व पुस्तक मेले के इस 22वें संस्करण का थीम बाल साहित्य पर केंद्रित होगा। इस हेतु मेले के आयोजक राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा मेला क्षेत्र में थीम-आधारित एक मंडप का निर्माण किया जाएगा, जहाँ प्रतिदिन बालोपयोगी गतिविधियाँ होंगी।

पुस्तक मेले में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास हिंदी एवं अँग्रेजी समेत लगभग 22 भाषाओं में अपनी पुस्तकों के साथ विभिन्न हॉलों में उपस्थित रहेगा। हिंदी, अँग्रेजी एवं क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकें अपने-अपने निर्धारित हॉलों में लगे स्टॉलों में बिक्री के लिए उपलब्ध होंगी। विदित हो कि न्यास विभिन्न भाषाओं में अनेक विषयों की पुस्तकें प्रकाशित करता है। न्यास की बाल पुस्तकों की भी अपनी विशिष्ट पहचान है।

न्यास के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन एवं निदेशक श्री एम.ए सिकंदर के कुशल नेतृत्व में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का यह 22वाँ पड़ाव एक नई मंजिल तय करेगा यह आशा है।

जन्मदिन, 4 जनवरी (1809)

लुई ब्रेल : नेत्रहीनों की आँख

पुण्यतिथि, 6 जनवरी (1852)

संसार में दृष्टिहीनों की संख्या बहुत अधिक है और एक युग वह भी था जब उनका कोई भविष्य न था। वे केवल भीख माँगकर ही गुजारा करते थे, परंतु आज स्थिति में आकाश-पाताल का अंतर है। आज अनेक दृष्टिहीन स्त्री-पुरुष विभिन्न स्थानों पर उच्च पदों पर काम कर रहे हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है और विभिन्न प्रकार के उद्योग-धंधों में लगे हैं। इस बात का अधिकांश श्रेय फ्रांस के दृष्टिहीन व्यक्ति ब्रेल को जाता है जिसने उनके लिए ऐसी लिपि का आविष्कार किया जिसे वे अँगुली के पोरवे से छूकर पढ़ना सीख सकते हैं। यह लिपि काग़ज़ पर उभरे हुए बिंदुओं के रूप में होती है जो काग़ज़ में छेद से बनते हैं।

लुई ब्रेल का जन्म फ्रांस में 1809 में हुआ था। उसका पिता पेरिस के निकट एक छोटे-से गाँव में रहता था और चमड़े का साज-सामान बनाता था। वहाँ उसका छोटा-सा कारखाना था। ब्रेल जब केवल चार वर्ष का था तो चमड़ा सीने के औज़ार से खेल रहा था कि वह उसकी एक आँख में जा लगा। कुछ समय बाद दूसरी आँख में भी खराबी आ जाने से पाँच वर्ष की आयु में ही वह पूरी तरह दृष्टिहीन हो गया। परंतु उसने हिम्मत नहीं हारी, वह पिता के काम में मदद करता रहा। पिता ने भी गत्ते पर कील से किए गए सूराखों द्वारा उसे पढ़ाने का यत्न किया। बाद में पिता ने उसे 1819 में पेरिस के दृष्टिहीनों के स्कूल में भरती करवा दिया।

उन्हीं दिनों उस स्कूल में सेना से अवकाशप्राप्त चार्ल्स बार्बियर नामक एक व्यक्ति आया। उसने एक तरकीब निकाली थी जिससे अंधे बच्चे पढ़ सकें। वह पंच से मोटे काग़ज़ में उभरे हुए छेद करके उन्हें अक्षरों की संज्ञा देता था। उन्हें विभिन्न ग्रुपों में बाँट देने से अक्षरों की पहचान बनती थी। लुई ने इसमें कुछ कमियाँ पाईं। उसे जब भी समय मिलता वह उस लिपि में सुधार के उपाय सोचता रहता। अंत में उसे सफलता मिली। उसने विभिन्न अक्षरों की पहचान के लिए छह बिंदुओं की पद्धति निकाली। यह तरीका सफल रहा और आज अंधे व्यक्तियों को पढ़ना सिखाने के लिए यही तरीका प्रयुक्त किया जाता है। आज इस तरीके का प्रयोग संसार की अनेक प्रमुख भाषाओं में किया जाता है।

लुई ब्रेल की मृत्यु 42 वर्ष की छोटी आयु में 1852 में ही हो गई थी। उस समय उन्हें कोई नहीं जानता था। परंतु आज दृष्टिहीनों को शिक्षित करने के लिए प्रयुक्त होने वाली इस लिपि को उनके नाम से ही स्मरण किया जाता है। अब तक इस लिपि में संसार की अनेक सुप्रसिद्ध पुस्तकें छप चुकी हैं। अब तो दृष्टिहीनों के लिए समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ भी इस लिपि में प्रकाशित होती हैं। इस लिपि में शॉर्ट हैंड का विकास भी हो चुका है और इस लिपि के टाइपराइटरों का निर्माण भी होने लगा है।

(*संसार के प्रसिद्ध आविष्कारक* पुस्तक से; अब 'अंधा' शब्द के बदले 'दृष्टिबाधित' शब्द प्रचलन में है। –*संपा.*)

हिंदी को चाहिए कि वह अपने दरवाजे और खिड़कियाँ खुली रखे। 'ऋग्वेद' में कहा गया है कि अच्छे विचारों का सभी दिशाओं से हम आवाहन करें। इसी तरह हिंदी एक विश्व-भाषा का रूप ले सकेगी। –इंदिरा गाँधी *संदर्भ : विश्व हिंदी दिवस, 10 जनवरी*

जीवन जीने की कला सिखलाती है किताब। –जगदीश गुप्त, कटनी, म.प्र.

गाँधी जी 'राष्ट्रपिता' और 'महात्मा' : कब, कैसे?

आजाद हिंद फौज की कमान विधिवत नेताजी सुभाष के हाथों में आने के बाद, आजाद हिंद फौज रेडियो के माध्यम से नेताजी सुभाष ने गाँधी जी से संवाद स्थापित किया, जिसमें आजाद हिंद फौज का उद्देश्य, अंतरिम सरकार की स्थापना तथा जापान से मिले सहयोग की चर्चा के साथ अपने भाषण में नेताजी सुभाष ने कहा, "एक बार देश आजाद हो जाए फिर इसे राष्ट्रपिता गाँधी के हाथों सौंप दूँगा।" उल्लेखनीय है कि नेताजी सुभाष के इस भाषण के बाद ही गाँधी जी का 'राष्ट्रपिता' नामकरण प्रचलन में आया।

बात उन दिनों की है जब गाँधी जी रवींद्रनाथ ठाकुर से मिलने शांतिनिकेतन गए। मिलते ही गाँधी जी ने रवींद्रनाथ ठाकुर को 'गुरुदेव' कह संबोधित किया। प्रत्युत्तर में रवींद्रनाथ ठाकुर ने गाँधी को 'महात्मा' कहा। तभी से मोहनदास करमचंद गाँधी 'महात्मा' के नाम से प्रसिद्ध हुए। प्रस्तुति : **रामगोपाल 'राही'**, लाखेरी, बूँदी, राजस्थान

यह कहना भी भूल होगा कि रोशनी बुझ गई, क्योंकि देश की यह रोशनी कोई साधारण प्रकाश न थी। यह प्रकाश हमको भविष्य में बहुत वर्षों तक देदीप्यमान करता रहेगा और इसका प्रकाश इस देश में हजारों वर्षों तक दिखाई देता रहेगा। क्योंकि यह प्रकाश सत्य का प्रतिनिधि था...। *गाँधी की हत्या के बाद नेहरू की श्रद्धांजलि*

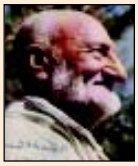

स्वाधीनता की लड़ाई का इतिहास हमें बताता है कि स्वाधीनता का वरदान कष्ट और विपत्तियाँ सहन किए बिना नहीं मिला करता और इस मार्ग में कठिनाइयों को हँस-हँसकर सहन करना आवश्यक है। ...हिंसा के युद्ध में विजय और पराजय, दोनों संभावना हैं, परंतु अहिंसा के युद्ध में पराजय की संभावना नहीं है। इसमें सदा विजय-ही-विजय है। हिंसा से कौमों में घृणा, द्वेष और शत्रुता पैदा होती है, परंतु अहिंसा जातियों में प्रेम उत्पन्न करती है और इसका परिणाम शांति है, अमन है। **–खान अब्दुल गफ्फार खाँ**

पुण्यतिथि स्मरण : 20 जनवरी (1988)

दासता जिंदगी का सबसे बड़ा अभिशाप है। किसी की दासता स्वीकार न करो। परोपकार कर दो; तुमसे दूसरे का भला हो, ऐसा काम करो; लेकिन गुलामी मत करो। इसमें इनसान की जिंदा ही मौत हो जाती है। **–सुकरात**

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निजभाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल।

पुण्यतिथि स्मरण : 6 जनवरी (1885) **–भारतेंदु हरिश्चंद्र**

शिक्षा का उद्देश्य है बुद्धि को कुशाग्र बनाना और विवेक-शक्ति को विकसित करना। यदि दोनों लक्ष्य पूरे हो जाते हैं तो मानना चाहिए कि शिक्षा का लक्ष्य पूरा हो गया। यदि कोई पढ़ा-लिखा व्यक्ति चरित्रवान नहीं है तो उसे पंडित नहीं कहा जा सकता। और यदि एक अनपढ़ व्यक्ति ईमानदारी से काम करता है, ईश्वर में विश्वास रखता है और उससे प्रेम करता है तो उसे महापंडित माना जा सकता है।

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का यह अर्थ नहीं कि लोग अपनी भाषाओं की उपेक्षा करें। भारत की सभी भाषाओं को समुचित महत्व मिलना चाहिए। ...स्वराज में स्वभाषा भी सम्मिलित है।

जन्मदिन स्मरण : 23 जनवरी (1897) **–सुभाष चंद्र बोस**

राष्ट्रीय शिक्षा सबसे निश्चित और सबसे लाभदायक राष्ट्रीय निवेश है। जिस प्रकार भौतिक रक्षा के लिए सैनिक बल की आवश्यकता होती है, उसी तरह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा आवश्यक है।

जन्मदिन स्मरण : 28 जनवरी (1865) **–लाला लाजपत राय**

जब तक भारतीय आकाश में सूर्य चमकता है, तब तक लाला लाजपत राय जैसे व्यक्ति नहीं मर सकते। लाला जी एक संस्था थे। ...वे अपने देश को इसलिए प्यार करते थे क्योंकि वे संसार को प्यार करते थे। **–महात्मा गाँधी** *लाला जी के निधन पर श्रद्धांजलि*

आओ, मनुष्य बनो। अपने संकीर्ण अंधकूप से निकलकर बाहर जाकर देखो, सभी राष्ट्र कैसे उन्नति के पथ पर चल रहे हैं। क्या तुम मनुष्य से प्रेम करते हो? तुमलोग क्या देश से प्रेम करते हो? तो फिर आओ, हम भले बनने के लिए प्राणपण से चेष्टा करें।

प्रत्येक धर्म निर्धन की सेवा करे और समाज के दलित अशिक्षित लोगों की अज्ञानता, दरिद्रता दूर करे और रोगियों की चिकित्सा-सेवा करे। **–स्वामी विवेकानंद** *जन्मदिन स्मरण : 12 जनवरी (1863)*

उस व्यक्ति की तरह
मत बनो, जो रेत के ढेर में
सिर छुपाए बैठा है
सूर्य की लालिमा / और
चाँद की धवल चाँदनी
तभी देख पाओगे
जब सिर उठाकर देखोगे
उसकी ओर।

विश्वनाथ (सूफ़ी संत रूमी)

रवींद्रनाथ टैगोर ने सुभाष चंद्र बोस को 'देशनायक' कहा था।

तीन कविता : तीन रंग

कुछ नया अंदाज भर लो

राकेश 'चक्र'

जो नहीं कल हो सका
वह आज कर लो
जिंदगी में
कुछ नया अंदाज भर लो।

सोचना वह बंद कर दो
हो गया जो भी बुरा है
जिंदगी में आज तक जो
मिली अपयश की सुरा है।
श्रेष्ठ कर लो
श्रेष्ठ सोचो
यूँ स्वयं पर
नाज़ कर लो।

कौन है, जिसने न कोई
भूल जीवन में करी हो
कौन-सी डाल, हर ऋतु
में, कि जो रहती हरी हो?
बंद खिड़की
खोल दो अब
कुछ नया
आगाज कर लो।

मुरादाबाद, उ.प्र.

धूप हो गई महँगी

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'

जाड़ा आकर देखो
लगा दिखाने गर्मी
ठंड हवा दिखला रहा
अपनी सब बेशर्मी।

जाड़े के इस मौसम में
धूप हो गई महँगी
शीतलहर की हर जगह
बढ़ गई गहमा-गहमी।

थर-थर लगा बदन काँपने
ठंड बढ़ गई इतनी
जाड़े भैया बतलाओ
दर्द और दोगे कितनी?

ओस का बादल आकर
टप-टप बूँद गिराता
पेड़ों और पत्तों को
सारी रात नहवाता।

दिशा-दिशा में फैलकर
सर्दी ने जाल बिछाई
सब पर रंग जमाने
जाड़े का मौसम आई।

गोरखपुर, उ.प्र.

तिरंगा

निर्मला सिंह

तीन रंग से बना तिरंगा
हमको लगता प्यारा
हिंदू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई
की आँखों का तारा।

मंदिर-मस्ज़िद-गुरुद्वारा
यही तीरथ धाम है
बालक-वृद्ध, नर-नारी के
अधरों की मुस्कान है।

कोई इस पर आँख उठाए
हमको नहीं गँवारा
तीन रंग से बना तिरंगा
हमको लगता प्यारा।

यह सपना है, यही हकीकत
अंतर्मन अभिमान है
इसे नहीं हम झुकने देंगे
यही हमारी शान है।

झाँसी की रानी ने अपना
जीवन इस पर वारा
तीन रंग से बना तिरंगा
हमको लगता प्यारा।

यही धर्म है, यही कर्म है
देश का अभिमान है
यही प्राण है, यही आन है
देश की पहचान है।

नेहरू, भगत, चाचा, सुभाष ने
सब कुछ ही न्योछारा
तीन रंग से बना तिरंगा
हमको लगता प्यारा।

बरेली, उ.प्र.

सुभाष चंद्र बोस ने 'दिल्ली चलो' का नारा दिया था।

नव वर्ष हो मंगलकारी!

सुगनचंद्र जैन 'नलिन', *गुना, म.प्र.*

नव वर्ष हो
शुभम सुखदायी
मंगलकारी!

अज्ञान-तम
मिटे देश से
फैलाएँ ज्ञान!

शिक्षित बनें
प्रत्येक नर-नारी
लोकतंत्र में!

करें कल्याण
मिलकर मानव
जन-जन का!

सत्य-अहिंसा
हों जीवन के मूल्य
हर मनुष्य के!

नया वर्ष

प्रो. शरद नारायण खरे
मंडला, म.प्र.

नया वर्ष
आया है चलकर
खुशियाँ नवल
मनाएँ
हर पुस्तक से
प्यार बढ़ाकर
शिक्षा-दीप
जलाएँ।

नया वर्ष
उजियारा लाया
आओ हम
अंधियार मिटाएँ
अक्षर का हम
दीप जलाएँ।

चलो, प्रणाम करें

आनंद बिल्थरे, *बालाघाट, म.प्र.*

चलो
प्रणाम करें
नए साल के
सूरज की
प्रथम किरण को
और दोहराएँ संकल्प
पूर्ण साक्षरता
पूर्ण स्वच्छता
पूर्ण मानवता का
औ' अर्घ्य दें
अपने उन
महापुरुषों को
जो, जीवनभर
प्रतिकार करते रहे
अशिक्षा
अस्वच्छता
दानवता का।

नए साल में

राधेलाल 'नवचक्र'

नए साल में
हम सब करते
नई प्रतीक्षा।
नए साल में
हम नई किताबें
खूब पढ़ेंगे।
और करेंगे
निरक्षरों को हम
सब साक्षर।
आपस में भी
मिलकर रहना
हम सीखेंगे।
अपनी भूलें
भी हम सुधारेंगे
नए साल में।
नए सपने भी
हम देखेंगे
नए साल में।
दूसरे के भी
आँसू हम पोछेंगे
नए साल में।
खूब हँसेंगे
हँसना भी सिखाएँगे
नए साल में।
आगे बढ़ेंगे
सही दिशा में
नए साल में।

भागलपुर, बिहार

हर मोड़ अपना / हर ओर अपना / अंधकार में प्रकाशवान बनो। –सुरेश आनंद, *रतलाम, म.प्र.*

पढ़-लिखकर अपढ़
बन गए आज साक्षर
जिसे आता नहीं लिखना
उसने किया हस्ताक्षर।

प्रकाश भानु महतो, नेंगटासाई, झारखंड

जिसने पढ़ी न किताब
वही अनपढ़ कहलाए
जिसने पढ़ी किताब
वही ज्ञानी कहलाए।

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान', गोरखपुर, उ.प्र.

पुस्तकें हैं वरदान
पुस्तकें हैं गुणवान
पुस्तकें हैं पकवान
जो चखें, धनवान।

माधुरी शास्त्री, जयपुर, राजस्थान

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है। –सुभाष चंद्र बोस

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **सा. सं. : दिसं. 2013 : सा. सं.** पठन-पाठन की संस्कृति को विकसित करने के साथ-साथ नैतिक शिक्षा देने का और सामाजिक चेतना जगाने का भी काम कर रहा है। जीवन में शिक्षा के महत्व और शिक्षा के प्रति समाज में जागृति लाने में **साक्षरता संवाद** अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। समाज को ज्ञान का प्रकाश बाँट रहा है **सा. सं.**। सामयिक तिथियों पर प्रसंगानुकूल लेख/विचार आदि पत्रिका की उपादेयता बढ़ा देते हैं। ज्ञान का सागर है **सा. सं.**। ऐसे उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए रा.पु. न्यास, विशेषकर **सा. सं.** के संपादकीय टीम को साधुवाद!

जगीर चंद्र, बंदरजूड़ा, बैलपोखरा, नैनीताल, उत्तराखंड

☐ **साक्षरता संवाद** में नित नए रचनाकार जुड़ रहे हैं जिससे पत्रिका की बढ़ती लोकप्रियता का पता चलता है। पत्रिका में सामग्री-संयोजन में जिस मेहनत से काम किया जाता है उससे इसकी उपयोगिता बढ़ जाती है। साक्षरता को समर्पित यह पत्रिका सभी वर्ग के पाठकों के लिए प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक व लाभदायक सिद्ध हो रही है। दिसं. अंक बेहद सुसंपादित लगा।

प्रकाश भानु महतो, ग्राम-बड़पाली, पो.-नेंगटासाई, भाया-सीनी, जि.-सरायकेला, खरसावाँ-833220, झारखंड

☐ गागर में सागर जैसी यह पत्रिका पूर्णतः पठनीय है। साक्षरता का प्रचार-प्रसार करती यह पत्रिका साक्षर एवं प्रबुद्धजनों को भी नई-नई जानकारियाँ दे रही है। सामयिक विषयों पर लेख महत्वपूर्ण होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनंदनीय सद्प्रयास।

पुष्कर द्विवेदी, 216, कल्पना नगर, सिविल लाइंस, इटावा-206001, उ.प्र.

☐ हर अंक में महापुरुषों के जीवन-परिचय एवं विचारों से अवगत कराने का आपका यह कार्य स्तुत्य है। हम भी उन महान विभूतियों के राह के अनुगामी बनें यही हमारा ध्येय हो। साक्षरता के क्षेत्र में आपके प्रयास को हमारा नमन।

कृष्णदेव चतुर्वेदी, 522, पंचशील नगर, भोपाल-3

☐ **नवं. :** अंक अच्छा एवं सशक्त है। सारी सामग्री सामयिक है। इसमें कुछ नवीन भी है। पद्य पक्ष अच्छा है। सो, सफल अंक के लिए बधाई! **साक्षरता संवाद** वर्तनी एवं वाक्य विन्यास की दृष्टि से अन्य पत्रिकाओं की तुलना में काफी उन्नत है। इसी से, पत्रिका में एकाध गलतियाँ भी खटकती हैं। **ओम प्रकाश मंजुल,** पीलीभीत, उ.प्र.

☐ गिजूभाई के बारे में जानकर अच्छा लगा। दीपावली से संबंधित रचनाएँ प्रभावशाली थीं। नवसाक्षरों के लिए प्रकाशित रचनाएँ उद्देश्यपूर्ण हैं। **आनंद बिल्थरे,** प्रेमनगर, बालाघाट-481001, म.प्र.

☐ **साक्षरता संवाद** उम्दा संपादकीय कौशल और परिश्रम का प्रतिफल है। महान विभूतियों की जीवनी एवं विचार पढ़कर मन खुश हो जाता है। कविताएँ दूर तक असर करती हैं। साक्षर और नवसाक्षर–दोनों ही के लिए पत्रिका समान रूप से उपादेय लगती है। पत्रिका में 'संपादकीय' की कमी दूर की जाए, लेखकों के पूरे पते भी दें।

बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान', गोलाबाजार, गोरखपुर, उ.प्र.

☐ **सा. सं.** वस्तुतः एक अद्भुत लघु पत्रिका है जिसमें विविध प्रकार की रुचिकर सामग्री–सुंदर कविताएँ, ज्ञानप्रद लघु आलेख, न्यास की नवीनतम पुस्तकों की जानकारी तथा ढेरों प्रकार की अन्यान्य रचनाएँ–बहुत कुछ इस छोटे-से कलेवर में बेहद सुरुचिपूर्ण ढंग से गुंफित और समाहित होती हैं। ऐसी सुंदर और मनमोहक पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई! नंवबर '13 अक हर तरह से सुंदर बन पड़ा था।

डॉ. आर. वासुदेव 'प्रशांत'
जवाहर नगर, धर्मशाला-176213, हि.प्र.

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

हिंदी वर्णमाला सीखो

गिरिवर गिरि गोस्वामी निर्मोही
पंखा रोड, नई दिल्ली

क से कबूतर, ख से खरगोश
ना मारो, ये हैं निर्दोष।
ग से गमला, घ से घड़ी
घड़ी में है ज़ंजीर पड़ी।
ड़ से सड़क, पकड़, अकड़।
च से चरखा, छ से छाता
वर्षा से जो हमें बचाता।
ज से जड़, झ से झंडा
पानी पीयो ठंडा-ठंडा।
ञ से अञ्जन, भञ्जन, व्यञ्जन।
ट से टमाटर, ठ से ठठेरा
निकला सूरज, हुआ सवेरा।

ड से डमरू, ढ से ढक्कन
दूध बिलोओ, निकालो मक्खन।
ण से कण, क्षण, प्रण।
त से तराजू, थ से थन
खाओ-पीयो, रहो मगन।
द से दवात, ध से धागा
दिन निकला तो बच्चा जागा।
न से नल, प से पतंग
खा-पीकर तुम बनो मलंग।
फ से फल, ब से बतख
करके बैटिंग बना शतक।
भ से भालू, म से मछली
घर के ऊपर होती छजली।

पुस्तक हमारी जान है
पुस्तक हमारी शान है
पुस्तक है हाथ में
भारत की पहचान है।
कांति अय्यर, सूरत, गुजरात

क च ट
त प य

य से यज्ञ, र से रस्सी
दूध से बनते मक्खन, लस्सी।
ल से लट्टू, व से वजन
करो अकेले भोजन, भजन।
श से शलगम, ष से षट्कोण
कौरव-पांडव के गुरु द्रोण।
स से सपेरा, ह से हल
नेक काम का मीठा फल।
क्ष से क्षत्रिय, त्र से त्रिशूल
कोई बोए काँटे, तू बो फूल।
ज्ञ से ज्ञानी, ज्ञ से ज्ञान
'निर्मोही' अक्षर पहचान।

मिलकर सोचें

रामनिवास 'मानव'
हिसार, हरियाणा

मिलकर बैठें, मिलकर सोचें
बातें करें विकास की।
आपस में हो भाईचारा
मन हो ज्यों मंदिर-गुरुद्वारा
रहे भावना भरी मनों में
मस्ती औ' उल्लास की।

अलग-अलग हों रंग सभी के
अलग-अलग हों ढंग सभी के
फिर भी रहे एकता सब में
डोरी हो विश्वास की।
नापें धरती, उड़ें गगन में
संकल्पों का बल हो मन में
स्वर्ग बनाना है धरती को
आशा करें उजास की।

ऐसे थे बापू

साबुन की बचत

बापू के एक साथी थे–शंकरलाल। वे उनके कपड़े धोते थे। एक दिन गाँधी जी ने उन्हें मना कर दिया–कपड़े मैं धो लूँगा।

शंकरलाल भाई सोच में पड़ गए। उन्होंने पूछा–क्या कपड़े ठीक से नहीं धुलते? उसमें कोई कमी रहती है?

गाँधी जी ने कहा–नहीं। कपड़े तो ठीक धुलते हैं।

–फिर क्या बात है?

बापू बोले–मुझे ऐसा लगता है कि साबुन कुछ ज्यादा खर्च होता है। मैं उतने साबुन से दुगुने कपड़े धोऊँगा।

शंकरलाल भाई अपना काम छोड़ना नहीं चाहते थे। वे बोले–अब साबुन कम खर्च करूँगा।

शंकरलाल भाई चाहते थे कि कपड़े उजले हों, साबुन ज्यादा लगे तो कोई बात नहीं। अब उन्होंने कम खर्च करना सीख लिया।

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/01/2014

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें
अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का
सूची-पत्र मंगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें :
प्रबंधक (विक्रय एवं विपेणन)
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

नया साल–ज्ञान का साल
नया साल–विज्ञान का साल
चलो, बढ़कर स्वागत करें
नया साल–फख्रे हिंदुस्तान का साल।
आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

नव वर्ष मंगलमय हो!

चित्र सौजन्य : कांति अय्यर

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070